

# गीता सार

क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो?  
कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है,  
न मरती है।

जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है,  
वह अच्छा हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा।  
तुम भूत का अफसोस न करो। भविष्य की चिन्ता न करो।  
वर्तमान चल रहा है।

तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो  
दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? न तुम कुछ  
लेकर आए, जो लिया यहीं से लिया, जो दिया इसी को दिया। जो  
लिया इसी (भगवान) से लिया। जो दिया इसी को दिया।  
खाली हाथ आए, खाली हाथ चले।

जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी  
और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर खुश हो रहे हो।  
बस यह प्रसन्नता ही तुम्हारे दुःखों का कारण है।

परिवर्तन ही संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते  
हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन  
जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो।

मेरा-तेरा, छूटा-बड़ा, अपना-पराया मन से मिटा दो,  
विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारे है और तुम सब के हो।

न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि,  
जल, वायु पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल  
जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो? तुम अपने  
आपको भगवान के अर्पित करो। यह सबसे उत्तम सहाय  
है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता  
शोक से सर्वदा मुक्त है।

जो कुछ तू करता है, उसे भगवान को अर्पण करता चल।  
इसी में तू सदा जीवन मुक्त अनुभव करेगा।

## == ESSENCE OF THE == BHAGAVAD GITA

Why do you worry without reason?  
Who are you scared of? Who can slay you? There  
was never a time that you (soul) did not exist nor will  
there ever be a time when you will cease to be.  
The soul is eternal.

What ensued in the past, was for good.  
What is occurring now is also for good and  
what will transpire will also be for good. Don't  
agonize over the past or fret over the future. Be  
in the Present.

Over what loss are you crying? What did you  
bring, that's now lost? What did you create that  
got destroyed? Whatever you got, you got from  
this world. Whatever you gave, to this world  
you gave back. You came with nothing, and you  
will depart with nothing.

What you possess today, was owned by  
someone else yesterday and will belong to someone  
else tomorrow. You rejoice as being the owner of your  
belongings, this false happiness is the cause of  
your sorrow.

Change is the law of life. What you identify as  
death is in fact life. In a flash of a second you  
become a Billionaire in another second you become  
a beggar.

Mine-yours, affluent-petty, ours-theirs get rid of these  
false differences then all belong to you, and you belong  
to all.

This body doesn't belong to you, neither do  
you belong to this body. Space, air, fire, water and  
earth are the building blocks for this body and  
to these your body will return. But your soul is  
eternal, so who are you?

Surrender to the Divine will, there is no  
Bigger pillar of support than this. One who has  
experienced this grace is forever freed from  
fear and worry.

Whatever you do, do as an offering  
to this universe. In doing so you will forever  
experience eternal freedom.